दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

(Hindi Literature)

Mentorship Program
Mukherjee Nagar

टेस्ट-11

(प्रथम प्रश्न-पत्र)

DTVF / OPT-23 **HL-2311**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time Allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक : 250 *Maximum Marks : 250*

नाम (Name): Payal Gwalwanshi

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.): [redacted]

ई-मेल पता (E-mail address): [redacted]

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 23 August · (11)

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2023] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2023]:

0	8	4	5	8	1	7

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): _____ टिप्पणी (Remarks): _____

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

खण्ड - क

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: $10 \times 5 = 50$

(क) यूनीकोड और हिन्दी

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्रथम एवं द्वितीय तल, प्रॉपर्टी नं. 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्रथम एवं द्वितीय तल, प्रॉपर्टी नं. 47/CC, बलिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'बुंदेली' बोली

बुंदेली बोली का विकास शौरसेनी अपभ्रंश के अंतर्गत पश्चिमी हिन्दी के तहत हुआ है।

शौरसेनी अपभ्रंश
↓
पश्चिमी हिन्दी
↓
बुंदेली बोली

क्षेत्र- मध्यप्रदेश के शिवपुरी, ग्वालियर, दतिया
उत्तरप्रदेश के झाँसी, आगरा, मैनपुरी
महाराष्ट्र के नागपुर में

भाषिक विशेषताएँ

(1) ध्वनि संरचना

ए और ओ ध्वनि का प्रयोग

(2) महाप्राण ध्वनियों का अल्पप्राणीकरण

उदा० हाथ > हात
पासा > पादा

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्रथम एवं द्वितीय तल, प्रॉपर्टी नं. 47/CC, बलिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(3) ड़ के स्थान पर 'र' (झगड़ा > झगरो)
च के स्थान पर स (सींच > सींस)
स के स्थान पर छ (सीढ़िया > छिड़ियाँ)

(5) क्रियाओं में ह का प्रयोग कम
(हैं, हो → यीं, यों)

(5) ह ध्वनि का लोप
उदा० चाहत → चाउत

(6) परसर्ग के रूप में नए प्रयोग
को → खाँ

(7) स्त्रीलिंग बनाने हेतु इन, इनी प्रत्यय का प्रयोग
लड़का → लड़किन
हरिन → हरिनी

(8) भविष्यकाल हेतु ह, नै का प्रयोग

बुंदेली बोली का क्षेत्र व्यापक है और बड़े जनसमुदाय द्वारा इसका प्रयोग किया जाता है जो इसके के लिये महत्वपूर्ण है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) देवनागरी लिपि के मानकीकरण हेतु हिंदी साहित्य सम्मेलन के सुझाव

देवनागरी लिपि के मानकीकरण में कई वैयक्तिक और संस्थागत प्रयास किये गये हैं।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन

वर्ष 1935 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थापना हुई थी जिसके तहत नागरी लिपि सुधार समिति की स्थापना की गई थी जिसकी अध्यक्षता काका कालेलकर द्वारा की गई थी।

और महात्मा गांधी द्वारा प्रतिनिधित्व किया गया था।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा दिये गये सुझाव

(1) ध और भ में गुजराती घुण्डी का प्रयोग किया जाना चाहिये।

(2) सावरकर बंधुओं द्वारा दी गई स्वर

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

घाशा (बारहखड़ी का प्रयोग होना चाहिए

उदा० अ, आ, अि, अी, अु, अू

(3) व्यंजन संयोग के समय अर्द्धव्यंजन को नीचे न लिखते हुए दायीं ओर लिखना

उदा० कद्दू → कद्‌दू

(4) शिरोरेखा का प्रयोग होना चाहिये - मुद्रण में

(5) मात्राओं को ऊपर-नीचे, लगाने की समस्या के समाधान हेतु -
मात्राओं को वर्णों से अलग, दायीं ओर पृथक रूप से लिखना

उदा० - दिपा → ि द प ा

इस प्रकार वर्तमान में देवनागरी लिपि अपने वैज्ञानिक और मानक रूप में विद्यमान है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में थियोसोफिकल सोसाइटी का योगदान

राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास की यात्रा वर्षों पुरानी है जिसमें महत्वपूर्ण योगदान स्वतंत्रता आंदोलन और सामाजिक-सांस्कृतिक सुधार आंदोलनों का रहा है।

थियोसोफिकल सोसाइटी का योगदान

थियोसोफिकल सोसाइटी की स्थापना ब्लावत्स्की और मैडम अल्काट द्वारा की गई थी जिसे बाद में एनी बेसेण्ट द्वारा नेतृत्व प्रदान किया गया।

महत्वपूर्ण योगदान

(1) 1816 में बनारस हिन्दू कॉलेज की स्थापना कर हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा दिया गया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(७) थियोसोफिकल सोसाइटी यद्यपि आयरिश महिला द्वारा स्थापित थी फिर भी इसमें अंग्रेजी के स्थान पर हिंदी का ही प्रयोग किया गया।

(८) राष्ट्रवाद के प्रचार प्रसार हेतु पत्र-पत्रिकाओं आदि में हिन्दी का प्रयोग

(९) <u>मद्रास</u> में आयोजित <u>हिन्दी साहित्य सम्मेलन</u> में एनी बेसेंट द्वारा कहा गया कि -

"सम्पूर्ण देश को एक सूत्र में बांधने हेतु हिन्दी सक्षम सम्पर्क भाषा है जिसका प्रयोग शिक्षा के माध्यम में भी होना चाहिये।"

राजभाषा हिन्दी के विकास में भारतीय नेताओं के साथ ही विदेशी विद्वानों का भी योगदान रहा है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) <u>हिन्दी भाषा एवं देवनागरी लिपि</u> के विकास में <u>शिवप्रसाद 'सितारे-हिन्द'</u> का योगदान।

भारतीय संविधान में हिन्दी को राजभाषा और देवनागरी लिपि को संवैधानिक स्थिति प्रदान की गई है।

अतः हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि के वर्तमान के मानक रूपों के विकास में कई भाषावैज्ञानिकों का योगदान है।

<u>शिवप्रसाद सितारे हिन्द का योगदान</u>

१९वीं सदी के उत्तरार्द्ध में राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द द्वारा फारसी निष्ठ खड़ी बोली का समर्थन किया गया तो वहीं राजा लक्ष्मण सिंह द्वारा संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली का समर्थन किया गया है।

<u>प्रेमचंद</u>, <u>सुदर्शन</u>, <u>विश्वम्भरनाथ कौशिक</u> आदि द्वारा शिवप्रसाद सितारे हिंद की भाषा को ही अपनाया गया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

योगदान

1) राजा भोज का सपना, मानव धर्मसार, इतिहास तिमिरनाशक प्रमुख रचनाएँ हैं। जिनमें खड़ी बोली का प्रयोग किया।
अपवाद - मानव धर्मसार में संस्कृत का प्रयोग

2) 1860 में शिक्षा विभाग के अधिकारी बनने के बाद खड़ी बोली के प्रयोग को प्रोत्साहन दिया।

3) हिन्दी में फारसी के क़, ख़, ग़, फ़, ज़ नुक्ता का प्रारंभ इन्हीं के द्वारा किया गया।

3) भाषा को व्याकरणिक दृष्टि से सरल बनाने के प्रयास किये

4) वर्तनी की ~~द्वि~~ द्विरूपता दिखाई देती है।
सकता → सक्ता

अतः वर्तमान की मानक हिन्दी के विकास में राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द का योग विस्मरणीय है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) हिंदी साहित्य के विकास में अपभ्रंश के योगदान पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी साहित्य का विकास

मूलतः हिन्दी भाषा के विकास के साथ प्रारम्भ हो गया था।

वैदिक कालीन संस्कृत से वर्तमान हिन्दी के विकास के बीच कई भाषाओं के चरणों के तहत हिन्दी साहित्य का विकास भी समानान्तर होता गया।

हिन्दी साहित्य के विकास में अपभ्रंश का योगदान

- कथ्य के स्तर में
- शिल्प के स्तर में

→ अपभ्रंश के अंतर्गत मुख्यतः लोकजीवन पर आधारित साहित्य की रचना का प्रारम्भ हुआ।

→ आदिकाल में वीरगाथा साहित्यों की रचना प्रारंभ हुई।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

उदाहरण - चारण कवियों द्वारा
- चन्द्रबरदाई द्वारा पृथ्वीराजरासो की रचना

→ चरित काव्यों की रचना का प्रारम्भ। जिनमें मुख्य चरित्र के आधार पर महाकाव्यों की रचना की गई
उदा० पृथ्वीराजरासो
बीसलदेव रासो
परमाल रासो

→ धार्मिक विषयों पर केन्द्रित साहित्यिक रचनाओं का प्रारम्भ
उदा० सिद्ध नाथ परम्परा
"पण्डिअ सअल सत्त बक्खाणइ
देहहि बुद्ध बसन्त ण जाणइ"
- नाथ परम्परा में
"जोगी सोई जाणिये जग तें रहै उदास
तत निरंजन पाइये कहै मच्छंदरनाथ"

→ महाकाव्यों की रचना
उदा० स्वयम्भू द्वारा पउम-चरिउ की रचना

→ लोक काव्य की परम्परा का विकास
उदा० संदेश रासक
ढोला मारू रा दूहा

शिल्प के स्तर पर

1) संस्कृत के वार्णिक छंदों के स्थान पर मात्रिक छंदों का प्रयोग प्रारंभ
उदा० दोहा, सोरठा
→ मुख्यतः दोहा और चौपाई का प्रारम्भ अपभ्रंश की ही देन है।

2) काव्य रूपों में फाग, चांचरी, रास, पद आदि का आरंभ

3) काव्य रूढ़ियों जैसे - बारहमासा, नायिका नख शिख वर्णन, शुक शुकी

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

संवाद आदि मुख्य विशेषता।

→ प्रबंध काव्यों में मंगलाचरण, दुर्जन निंदा, सज्जन प्रशंसा का प्रारंभ

5) दोहा-चौपाई में 'कड़वकबद्ध परम्परा' का आरम्भ जिसमें 5 या 7 चौपाई में एक दोहे का प्रयोग दिया जाता है।
उदाहरण- जायसी द्वारा पद्मावत में प्रयोग

प्रमुख साहित्यिक उदा०

जो भर जइये खटिया पर तो कौआ गिद्ध न खइये माँस,
जो मर जइये रण खेतन में तो नाम अमर हो जाई।

हिन्दी साहित्य के प्रारम्भिक काल में 'अपभ्रंश' का व्यापक प्रयोग था जिससे साहित्य की समृद्ध परम्परा का प्रारंभ किया।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्रथम एवं द्वितीय तल, प्रॉपर्टी नं. 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिन्दी में अनूदित लेखन पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्रथम एवं द्वितीय तल, प्रॉपर्टी नं. 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'दक्खिनी हिंदी' के प्रयोग-क्षेत्र बतलाते हुए 'दक्खिनी हिंदी' की भाषागत विशेषताओं का उद्घाटन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) स्वतंत्रता के बाद राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु किए गए सरकारी प्रयासों पर प्रकाश डालिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) बिहारी हिंदी की बोलियों का परिचय दीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) श्री कामताप्रसाद गुरु के हिंदी व्याकरण-लेखन की विशेषताओं पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) 'राजभाषा हिंदी' की वर्तमान स्थिति में सुधार हेतु सुझाव दीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्रथम एवं द्वितीय तल, प्रॉपर्टी नं. 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) उन्नीसवीं सदी में खड़ी बोली हिंदी के विकास में सामाजिक सुधार आन्दोलनों की भूमिका पर प्रकाश डालिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) दक्खिनी हिंदी के विकास में आदिलशाही वंश के शासकों के योगदान का निरूपण कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्रथम एवं द्वितीय तल, प्रॉपर्टी नं. 47/CC, बलिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्रथम एवं द्वितीय तल, प्रॉपर्टी नं. 47/CC, बलिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

खण्ड - ख

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: $10 \times 5 = 50$

(क) संतकाव्यधारा और सूफीकाव्यधारा में अंतर

हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल की निर्गुण भक्तिधारा के अंतर्गत ही संतकाव्यधारा और सूफीकाव्यधारा का विकास हुआ।

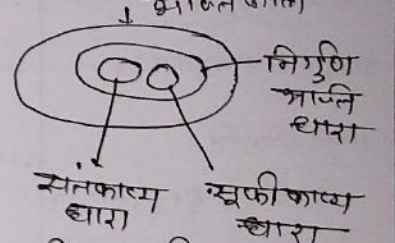

संतकाव्यधारा और सूफीकाव्यधारा में अंतर

संतकाव्यधारा	सूफीकाव्यधारा
दर्शन - शंकर का अद्वैतवाद - उपनिषद का प्रभाव	दर्शन - इस्लामी एकेश्वरवाद - सूफी तसव्वुफ
प्रभाव - सिद्ध-नाथ हठयोग का प्रभाव	प्रभाव - इस्लाम

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

संतकाव्य धारा	सूफी काव्यधारा
→ साधनात्मक रहस्यवाद	→ भावनात्मक रहस्यवाद
→ अंतर्मुखी रहस्यवाद	→ बहिर्मुखी रहस्यवाद
→ योग मार्ग को महत्व	→ प्रेम मार्ग को महत्व
→ अक्खड़ता, सामयिकता	→ प्रेम, माधुर्य
→ भाषा - सधुक्कड़ी	→ भाषा - अवधी, फारसी
→ प्रमुख कवि - कबीर, दादू, नानक	→ प्रमुख कवि - जायसी, कुतुबन, मंझन

समानताएँ

→ दोनों ही धारा में गुरु का महत्व है।
→ दोनों में नारी को माया और शैतान का रूप ; भ्रामक माना है।
→ दोनों ने निर्गुण ईश्वर की भक्ति की
→ सामाजिक सुधार पर बल

परन्तु जहाँ संत काव्यधारा धार्मिक अंधविश्वास को स्पष्ट करती है वहीं सूफी काव्यधारा समन्वय स्थापित करती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) नाटककार रामकुमार वर्मा

नाटककार रामकुमार वर्मा का हिन्दी नाटक विधा के विकास में महान योगदान है।

इन्होंने मुख्यतः जयशंकर प्रसाद की नाटक परम्परा का अनुसरण किया। जिसके तहत दुःखात्मक नाटकों का लेखन प्रमुख है।

इनके नाटकों में आदर्शवादी विचारधारा का सर्वत्र प्रभाव है साथ ही नारी चरित्रों के आदर्शवादी रूप को महत्व दिया गया है।

नाटककार रामकुमार वर्मा के नाटक
- ऐतिहासिक नाटक
- सामाजिक नाटक
- प्रमुख लघुनाटक और एकांकी

1) ऐतिहासिक नाटक – मुख्यतः अतीत के गौरव के साथ भविष्य के सुख की कामना से प्रेरित नाटक है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

प्रमुख नाटक - शिवाजी (शिवाजी के साहस पर)
- कौमुदी महोत्सव (चन्द्रगुप्त की गौरवपूर्ण गाथा)
- अशोक का शोक (कलिंग युद्ध के पश्चात)
- कला और कृपाण (उदयन के जीवन संबंधी)

सामाजिक नाटक

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्रथम एवं द्वितीय तल, प्रॉपर्टी नं. 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) अज्ञेय की काव्यानुभूति

~~अज्ञेय की~~

अज्ञेय मुख्यत: प्रयोगवादी कविता लेखन के महान कवि हैं। जिन्होंने अपनी काव्य रचना में नवीन प्रयोग किये।

उनकी असाध्यवीणा कविता उनकी काव्यानुभूति की महान प्रस्तुति है।

अज्ञेय की काव्यानुभूति

(1) भावनाओं की गहराई पर आधारित काव्य रचना

(2) सूक्ष्म और तार्किक चिंतन को महत्व दिया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्रथम एवं द्वितीय तल, प्रॉपर्टी नं. 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(7) प्रयोगवादी कविता के अनुसार पर्यायशील विचारों का समाहित किया है।

(8) सार्त्र के अस्तित्ववाद, टी.एस इलियट के वैयक्तिकतावाद का महान प्रभाव है।

(9) आंतरिक विचारों एवं भावनाओं का महत्व

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) प्रकृतवादी हिन्दी उपन्यास

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्रथम एवं द्वितीय तल, प्रॉपर्टी नं. 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) अष्टछाप

अष्टछाप का संबंध मुख्यतः कृष्णभक्ति काव्यधारा के महान कवियों के समूह से है।

इसमें वल्लभाचार्य और उनके शिष्य और पुत्र विट्ठलनाथ के शिष्यों को शामिल किया गया है।

अष्टछाप

वल्लभाचार्य के 4 शिष्य	विट्ठलनाथ के चार शिष्य
→ कृष्णदास	→ छीतस्वामी
→ सूरदास	→ गोविन्दस्वामी
→ परमानन्ददास	→ चतुर्भुजदास
→ ~~[illegible]~~	→ नन्ददास
→ कुंभनदास	

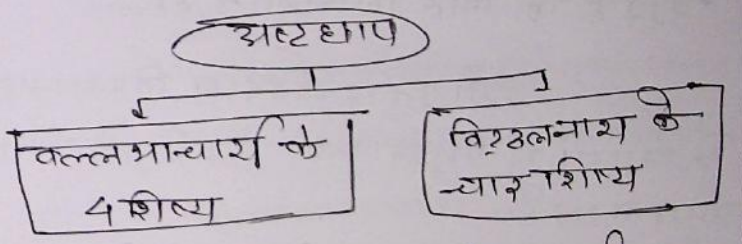

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्रथम एवं द्वितीय तल, प्रॉपर्टी नं. 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

अष्टछाप की स्थापना विट्ठलनाथ द्वारा की गई थी।

अष्टछाप में सबसे प्रमुख कवि सूरदास माने जाते हैं जिन्होंने वल्लभाचार्य के मिलने के बाद कृष्ण की दास्य के स्थान पर सख्य भाव से भक्ति की -

'सूर हैं कै काहे घिघियात हो'

इसी प्रकार नंददास विट्ठलनाथ के शिष्यों में प्रमुख कवि हैं। जिनके लिये प्रमुख कथन है-

'और कवि गढ़िया, नंददास जड़िया।'

कुंभनदास भी कृष्ण भक्ति के महान कवि हैं जिन्होंने राजनीतिक मोह के स्थान पर भक्ति को महत्व दिया।

"कुंभन को कहा सीकरी सो काम
आवत-जात पनहिया टूटी
बिसरी गयो हरिनाम।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) 'नई कहानी' की शिल्पगत विशेषताओं का उद्घाटन कीजिए। 20

नई कहानी आंदोलन की शुरुआत मुख्यत: स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात (1950 के पश्चात) मानी जाती है।

नई कहानी आंदोलन के उदय के कारण

(1) स्वतंत्रता और विभाजन की विभीषिका के कारण मोहभंग
(2) शहरों की ओर रोजगार हेतु पलायन और शहरों का अकेलापन, अजनबीपन, निरर्थकता बोध
(3) संयुक्त परिवार का टूटना और एकल परिवारों में वृद्धि से भावनाओं का महत्व कम
(4) स्त्री-पुरुष संबंधों में परिवर्तन
- स्त्री शिक्षा में वृद्धि से पितृसत्तात्मक समाज पर चोट
(5) बढ़ती यौन चेतनाएं, अपराध, हिंसा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

नई कहानी आंदोलन की शिल्पगत विशेषताएँ

(1) कथानक का टूटना - नई कहानियों में मुख्यतः कथानक के पारम्परिक ढाँचे के स्थान पर टूटे हुए कथानक की परम्परा प्रारम्भ

उदाहरण - राजेन्द्र यादव की टूटना कहानी में

कुछ स्तर में प्रेमचंद की गिला कहानी में भी ये विशेषता विद्यमान है।

(2) आदि-मध्य-अंत के ढाँचे का टूटना

पहले की आदर्शवादी कहानियों में कहानी के प्रारम्भ, मध्य और सुखद अंत का एक क्रमिक ढाँचा होता था परन्तु नई कहानियों में कोई क्रमिक संरचना नहीं

उदा० मार्कण्डेय की 'हंसा और दता

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(3) भाषा का व्यापक होना

नई कहानी आंदोलन में भाषा में नए-नए शब्दों का प्रवेश जैसे - अंग्रेजी के शब्द, पंजाबी, बांग्ला आदि का प्रयोग

उदा० टूटना कहानी में अंग्रेजी का प्रयोग
'कॉन्ट वी फॉरगेट पास्ट'

(4) प्रतीकों का प्रयोग

नई कहानियों में अप्रस्तुत कथ्य की प्रस्तुतीकरण हेतु प्रतीकों का अधिकाधिक प्रयोग किया जाता है।

उदा० मेरा दुश्मन कहानी में प्रारम्भ में ही दो लोगों के पंजा लड़ाने का प्रतीक

(5) चरित्र योजना - नई कहानी आंदोलन के चरित्र स्वतंत्र और

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

स्वाभाविक होते हैं न कि आदर्शवादी कहानियों की तरह कल्पित चरित्र।

(6) शैली - चेतनाप्रवाह शैली, पत्र शैली, डायरी लेखन, सूत्र शैली का प्रयोग।

उदा० 'यही सच है' (मन्नू भण्डारी) की कहानी डायरी लेखन पर आधारित है।

(7) मुहावरों का प्रयोग भी होता है।

(8) भाषा में नाटकीयता, काव्यात्मकता, ध्वन्यात्मकता और बिम्बात्मकता के गुण भी होते हैं।

नई कहानी आंदोलन ने कथ्य और शिल्प के स्तर पर कई नए प्रयोग किये इसलिये इसका नाम नई कहानी उचित प्रतीत होता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्रथम एवं द्वितीय तल, प्रॉपर्टी नं. 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) घनानंद के काव्य-शिल्प पर प्रकाश डालिए। 15

घनानंद मुख्यतः रीतिकाल के सबसे महान कवियों में से एक हैं। इनका संबंध रीतिकाल की रीतिमुक्त काव्यधारा से है।

अर्थात् दरबार में रहते हुए भी इन्होंने धन और यश प्राप्ति के स्थान पर अपनी भावनाओं की गहराई के आधार पर काव्य रचना की।

प्रमुख रचनाएँ - प्रेम सुजान

घनानंद का काव्य शिल्प

घनानंद के काव्य शिल्प की अद्भुत प्रवृत्ति के कारण इन्हें भाषा के स्तर पर भाषा प्रवीन की संज्ञा दी गई थी।

भाषा - मुख्यतः ब्रजभाषा का प्रयोग साथ ही फारसी, अरबी शब्दों का भी यथासंभव प्रयोग किया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्रथम एवं द्वितीय तल, प्रॉपर्टी नं. 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

आचार्य शुक्ल ने इनकी शिल्पगत विशेषता की प्रशंसा में निम्न कथन कहा है

"भाषा पर जैसा अचूक अधिकार इनका था वैसा किसी और कवि का नहीं थी। अतः ये भाषा के प्रवीण थे।"

→ शैली - भाषा में अभिधा के स्थान पर व्यंजना और लक्षणा शब्द शैली का अधिक प्रयोग किया है।

→ मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग भी इनकी भाषा को सौन्दर्य प्रदान करता है।

→ छंद - छंद के तहत दोहा, कवित्त, सवैया का प्रयोग

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्रथम एवं द्वितीय तल, प्रॉपर्टी नं. 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

- अलंकार - अलंकारों का प्रयोग गहन अनुभूति की प्रस्तुति हेतु न कि चमत्कार उत्पन्न करने हेतु

विरोधाभास अलंकार

"उजरनि बसि है हमारी अँखियानी देखो"

श्लेष अलंकार

"तुम कौन सी पाटी पढ़े हो लला, मन लेहु पै देहु छटांक नहीं"

घनानंद ने मुख्यतः वियोग श्रृंगार पर आह्लादित काव्य रचना की परन्तु वृन्दावन जाने के बाद कृष्ण भक्ति में लीन हो गए -

ऐ री रूप रामाधे राधे, राधे राधे राधे राधे, तुमसें मिलने को ब्रजमोहन बहुत जतन है साधे

अतः घनानंद का कथ्य और शिल्प दोनों ही इनकी सूक्ष्म और गहन दृष्टि को प्रस्तुत करता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्रथम एवं द्वितीय तल, प्रॉपर्टी नं. 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) छायावादी कविता के बिंब-सौंदर्य पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

छायावाद की शुरुआत मुख्यत: 1930 के दशक से प्रारम्भ मानी जाती है। जिस पर पाश्चात्य साहित्य की कॉलरिज, वर्ड्सवर्थ की स्वच्छंदतावादी काव्य का प्रभाव माना जाता है।

भारतीय छायावादी कविता के प्रमुख कवियों में ~~सुमि~~ सुमित्रानंदन पंत, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला और महादेवी वर्मा का नाम उल्लिखित है।

छायावाद मुख्यत: प्रकृति प्रेम, श्रृंगार रस, आदि विषयों पर आधारित है परन्तु आचार्य शुक्ल द्वारा छायावादी कविता को साहित्य में ~~[illegible]~~ विशेष स्थान नहीं दिया गया है।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

छायावादी कविता का बिम्ब सौन्दर्य

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

छायावादी कविता में प्रकृति के सौन्दर्य को निरूपित करने हेतु कई प्राकृतिक उपादानों का प्रयोग बिम्ब निर्माण हेतु किया गया है।

इस काल में बिम्बों के नार प्रकार सामने आए।

बिम्ब
- विराट और सांश्लिष्ट बिम्ब
  ↓
  इसका प्रयोग मुख्यत: ओज गुण युक्त कविता में किया गया है।
- कोमल और सुकुमार बिम्ब

उदा० -
'है अमानिशा उगलता गगन घन अंधकार
खो रहा दिशा का ज्ञान स्तब्ध है पवन चार'

राम की शक्ति पूजा द्वारा उद्धृत सूर्यकांत त्रिपाठी निराला द्वारा
मुख्यत: प्रयोग।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्रथम एवं द्वितीय तल, प्रॉपर्टी नं. 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कोमल और सुकुमार बिम्ब

इस प्रकार के बिम्ब का प्रयोग मुख्यत: श्रृंगार रस के संयोग पक्ष के निरूपण और प्रकृति के सौंदर्य के वर्णन में किया जाता है।

उदा०

"नयनों का नयनों से गोपन प्रिय सम्भाषण,
पलकों का नव पलकों पर प्रथमोत्थान पतन।"

(सूर्यकांत त्रिपाठी निराला)

छायावादी कविताओं में बिम्बों का ऐसा सूक्ष्म प्रयोग है कि कविता को पढ़ते ही, आँखों के सामने सजीव चित्र तैरने लग जाते है।

अत: छायावादी कविताओं की बिम्बयोजना अद्वितीय है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) बिहारी रीतिकाल के सर्वश्रेष्ठ कवि क्यों माने जाते हैं? सोदाहरण उत्तर दीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बिहारी को रीतिकाल के सर्वश्रेष्ठ कवि की संज्ञा दी गई है। इनके द्वारा मुख्यत: श्रृंगार रस पर आधारित काव्य रचना की गई जिसका उद्देश्य धन-यश कमाना था परन्तु साथ ही इन्होंने सामाजिक और आर्थिक समस्याओं पर ध्यान दिया है।

ग्रियर्सन द्वारा बिहारी की प्रशंसा में निम्न कथन कहा गया है।

"पूरे यूरोप में बिहारी के समान एक भी कवि नहीं है जो बिहारी की बराबरी कर सके"

बिहारी की श्रेष्ठता के आधार

- कथ्य के स्तर पर
- शिल्प के स्तर पर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कथ्य के स्तर पर

(1) श्रृंगार का विस्तृत वर्णन जिसमें श्रृंगार रस के संयोग और वियोग सभी पक्षों का वर्णन है।

'बतरस लालच लाल की मुरली धरी लुकाय
सौंहैं करै भौंहनी हँसै देन कहै नट जाय'

(2) काव्य में मुख्यत: मध्यम वर्ग के नायक-नायिका को रखा है। और उनकी भावनाओं और प्रेम का वर्णन किया है।

'कहत नटत रीझत खिजत मिलत खिलत लजियात
भरे भौन में करत हैं नैनन ही सौं बात'

(3) राजनीतिक चेतना को भी ध्यान में रखा है और राजा को शासन में ध्यान देने का आह्वान किया है।

नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहिं विकास इहि काल
अलि कली ही सौं बंध्यौ आगे कौन हवाल'

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(4) पारिवारिक चेतना पर भी प्रकाश डाला, नारी की परिवार की मर्यादा हेतु शोषण को सहना को कविता में चित्रित किया है।

" कहति न देवर की कुबात, कुलतिय कलह डराति ''

(5) कृष्ण भक्ति भावना का भाव

" मेरी भव बाधा हरो राधा नागरि सोइ
जा तन की झाँई परत स्याम हरित दुति होय ''

शिल्प के स्तर पर

(1) भाषा - ब्रजभाषा का सुन्दर प्रयोग किया है।

(2) बिम्ब प्रयोग - बिम्बों का वैविध्य है।

(3) अलंकार - अर्थालंकार का विस्तृत प्रयोग

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

काव्य रूप - मुक्तक छंदों का प्रयोग

सतसैया के दोहरे ज्यों नाविक के तीर
देखन में छोटे लगे घाव करे गंभीर

- प्रतीकयोजना
- बिम्ब का सबसे महान उदा० -

कहत नटत रीझत खिजत मिलत
खिलत लजियात
भरे भौन में करत है नैननु ही सौ
बात

इसी कारण बिहारी को
रीतिकाल का सर्वश्रेष्ठ कवि माना गया
है। बिहारी सतसई इनकी महानता
की निशानी है इन्हें गागर में सागर
के कवि की संज्ञा भी दी जाती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) पद्माकर के शृंगार-वर्णन पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

पद्माकर मुख्यतः रीतिकाल काव्यधारा के रीतिबद्ध काव्य के महान कवि है।

जिन्होंने रीतिकाल की लक्षण ग्रंथ परम्परा पर आधारित काव्य रचना की है।

प्रमुख रचना - जगद्विनोद

पद्माकर का श्रृंगार वर्णन

(1) पद्माकर मुख्यतः श्रृंगार के कवि है। जिसमें देहमूलक श्रृंगार का वर्णन किया गया है।

इनके काव्यों में नायिका के अंगों की प्रशंसा भोग, विलास आदि भावना से की गई है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

गुल गुली गिल मे गलीचा है गुनिजन है)
सेज है सुराही है सुरा है और प्याला भी।

(3) संयोग की स्थितियों का वर्णन त्यौहारों
और उत्सवों के माध्यम से
मुख्यतः होली के त्यौहार मे

" या अनुराग की फाग लखौ
जहाँ राजत राज किशोर किशोरी
गोरीन संग भीजैगो श्याम,
श्याम संग भीजेगी गोरी।"

(4) वियोग के वर्णन के लिये ऋतुओं
को आधार बनाया गया है
ऋतु के माध्यम से विरह
वेदना की तड़प उजागर की है।
" पावस बनायो तो विरह न बनायो
जो विरह बनायो तो पावस नहीं "

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

• श्रृंगार रस के साथ वीर रस
का वर्णन भी उनके काव्य में है जिसका
कारण दरबारी माहौल ही था।

" उपकै लपकै हहकै भरौं है
फूलें चिलिका सी मड़कै जहाँ है।"

पद्माकर मुख्यतः श्रृंगार
के कवि है उनके अधिकांश काव्य
श्रृंगार रस की विशेषताओं को
धारण करते है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) निर्मल वर्मा के यात्रा साहित्य के वैशिष्ट्य को रेखांकित कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

निर्मल वर्मा का यात्रा साहित्य के क्षेत्र में महान योग-दान है।

यात्रा साहित्य

- विदेशों की यात्रा पर आधारित
- भारत की आंतरिक यात्रा पर आधारित

इनके द्वारा यूरोप के कई देशों की यात्रा की गई साथ ही रूस, फ्रांस की यात्राएँ प्रमुख है।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

प्रमुख यात्रा वृतांत

(1) चीड़ों पर चाँदनी
(2) हर बारिश में
(3) धुंध से उठती धुन

यात्रा वृतांत जैसी नई गद्य विधा में निर्मल वर्मा का महान योगदान है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्रथम एवं द्वितीय तल, प्रॉपर्टी नं. 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) जयशंकर प्रसाद और अज्ञेय की कहानी-कला की तुलना कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) मोहन राकेश के नाटक 'आधे-अधूरे' के महत्त्व पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) रामवृक्ष बेनीपुरी के रेखाचित्र-लेखन पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

रफ कार्य के लिये स्थान

(Space for Rough Work)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

रफ कार्य के लिये स्थान

(Space for Rough Work)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation